Bodhi-Path Year 2021 January Issue Volume 20 Page No 33-39

पालि भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका

श्री. विजयकुमार झुंबरे
सहाय्यक प्राध्यापक,
पालि विभाग, भाषा व वाड्मय संकुल,
पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापूर विश्वविद्यालय, सोलापूर.

सारांश:

भाषा एक मानवी जीवन का अनिवार्य और अंगभूत घटक हैं। वो भाषा ही हैं जो मनुष्य के जीवन में व्यवहार के लिए और जीवन जीने के लिए एक मात्र माध्यम है। अपितु भाषा आज के मनुष्य के लिए एक जीव ही समझा जा चुका है। मनुष्य अपनी भाषा के माध्यम से अपना विचार, अपनी भावना अपनोंसे प्रकट करता है। चाहे वो भाषा किसी भी तरह की क्यों ना हो, अगर वो एक दूसरे के समझ में आए तो कुछ कठीनाइयॉ नही होती। लेकिन जब दो अलग-अलग भाषाऍ एक दूसरे के संपर्क में आए तो उन भाषाओं का ज्ञान, विचार एक दूसरे के समझ में नही आते। उस समय संपर्क में आए भाषा का ज्ञान होना आवश्यक होता है। आज इस आधुनिक युग में अलग-अलग भाषाओं का ज्ञान लेकर, भाषा समझने का मनुष्य प्रयास कर रहा है। आधुनिक भाषाओं के साथ-साथ मनुष्य प्राचिन भाषाओं का भी अभ्यास कर रहा हैं। ऊन प्राचिन भाषाओं में पालि भाषा एक महत्वपूर्ण भाषा है, जिसमें मानवी कल्याण का बुध्दोपदेस और धम्म का मार्ग हैं। जो आज के वर्तमान स्थिती में आवश्यक हैं। लेकिन प्राचिन पालि भाषा का ज्ञान होने के लिए सही और योग्य अनुवाद होना अतिआवश्यक हैं। उस बारे इस प्रबंध के माध्यम से पालि भाषा अनुवाद की भूमिका स्पष्ट करने का प्रयास किया हैं।

प्रस्तावना:

यह सर्वविदित तथ्य है कि पालि साहित्य की भाषा बुध्द वचनों की भाषा हैं। जो बुध्द वचन मानवी कल्याण हेतु, दु:ख मुक्ती हेतु, भगवान बुद्ध के द्वारा उस समय की लोकभाषा में उपदेशीत किए वचन हैं। ये वो लोकभाषा थी, या उसे जनभाषा भी कहते हैं, जो भगवान बुद्ध के समय सामान्य जनों की व्यावहारिक भाषा थी। जो सीधी और सरल भाषा थी। उसी भाषा में भगवान बुद्ध ने मनुष्यों को कल्याण हेतु, दु:ख मुक्ती हेतु, अविद्या नष्ट करने हेतु सदाचरन का सिधा, सरल उचित मार्ग, धम्म मार्ग उपदेशीत किए। जिसे खुद भगवान बुध्द ने सकाय निरुत्ति की भाषा भी कही हैं। इसका संदर्भ हमें विनयपिटक और मज्झिमनिकाय के चुल्लवग्ग में मिलता है। यमेड और तेकुल नामक ब्राम्हण भिक्षुओं ने भगवान बुद्ध से बुध्द वचन को छान्दस भाषा में परिवर्तित करने की अनुमती चाही,

> "एतरहि भन्ते! "भिक्खु नानानामा, नानागोत्ता, नानाजच्चा, नाना कुला पब्बजिता, ते सकाय निरुत्तिया बुध्द वचनं दूसेन्ति। हन्द मयं भन्ते, छन्दसो आरोपेमा ति"।

लेकिन भगवान बुध्द ने उस प्रस्ताव को स्विकार नही किए। उन्होंने कहा कि, नही भिक्षुओं, यह उचित न होगा, यदि बुध्द वचन छान्द्स मे परिवर्तित हुआ तो आपत्ति होगी। वो दुक्कट दोष होगा। "भिक्षुओं मैं तुम्हें अनुमती देता हूं, अपनी भाषा (सकाय निरुत्ति) में सिखने की',

> न भिक्खवे ! बुध्द वचनं छन्दसो आरोपेतब्बं, यो आरोपेय्य आपत्ति दुक्कटस्स। अनुजानामि भिक्खवे ! सकाय निरुत्तिया बुध्द वचनं परियापुणितुन्ति।" [1]

और यही भगवान बुध्द द्वारा दिए हुए उपदेस और मार्ग से ही उस समय से लेकर आज तक हम देखते हैं कि, किस तरह भिक्षुओं ने हर जगह घुमकर बुध्द धम्म का उपदेस प्रचारित किए। जो उपदेस हमें आज कुछ भाषाओं के अनुवाद के रुप में पालि भासा के नाम से प्राप्त होते हैं। इस संदर्भ में हमें र. शौरिराजन जी के वक्तव्य से भी पुष्टी मिलती है, "अनुवाद की समस्याएँ" इस ग्रंथ में परिचर्चा के रुप मे वो कहते हैं कि, "भारत में अनुवाद साहित्य का अपना महत्व बौध्द तथा जैंन काल से प्रारंभ हुआ और आज तक बराबर बढता आता है। बौध्द भिक्षु, जैंन साधु देश के विभिन्न भागो में घूमकर, निवास कर, स्थानिय भाषाओं मे अपनी बातें, रचनाएँ, धर्मग्रंथ रुपांतरित करने कराने में सफल हुए[2]। इसी दृष्टिकोण से पालि भाषा एवं पालि साहित्य के अनुवाद की सफलता हमें भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अन्य देशों के भाषाओं में भी दिखाई देता है। जैसे कि श्रीलंका के सिंहली भाषा में, थायलंड के थाई भाषामें, बर्मा के बर्मी भाषामें, तिब्बत के तिब्बती एवं भोट भाषामें इत्यादि और भी ऐसे विदेशी भाषाएँ हैं जहाँ पालि भाषा एवं साहित्य का अनुवाद प्राप्त होता हैं।

श्रीलंका में तो प्रथम रुप में पालि तिपिटक साहित्य सिंहली भाषा में निर्माण हुआ। जिस के माध्यम से चौथी-पाँचवी सदी में आचार्य बुध्दघोष द्वारा पालि एवं संस्कृत में अट्ठकथाओं का निर्माण हुआ दिखाई देता हैं। ऐसे ही हमें तिब्बती में लामा तारानाथ द्वारा 1608 में विरचित "भारत वर्ष में बौध्दधर्म का इतिहास" नामक ग्रंथ का मूल भोट भाषा से 1869 में जर्मन तथा रुसी में अनुवाद दिखाई देता है। और आगे 1928 में इसका जापानी अनुवाद भी होता हुआ दिखाई देता हैं। और इसी ग्रंथ का हरिनाथ दे द्वारा अंग्रेजी अनुवाद का कुछ अंश "दी हेराल्ड" नामक पत्रिका (1911) में निकला था। और आगे 1971 में हिंदी अनुवाद श्री रिगजिन लुण्डुप लामा इनके द्वारा हमें दिखाई देता है[3]। इसी तरह पालि साहित्य

थाई, बर्मी, अंग्रेजी में अनुवादीत हुआ दिखाई देता हैं। इस प्रकार पालि भाषा एवं पालि साहित्य का विकास अनुवाद एवं अनुसंधान के रुप में इन विदेशी भाषाओं के माध्यम से ज्ञात होता हैं। इसमें अंग्रेजी भाषा की अहम भूमिका आज हमें महत्व पूर्ण दिखाई देती हैं। जिसका पालि भाषा एवं पालि साहित्य के अध्ययन क्षेत्र में अनुवाद एवं अनुसंधान के रुप में बडा योगदान रहा हैं। इसमें सत्रहवी शताब्दी के उत्तरार्ध में सर विलियम जोन्स द्वारा स्थापित "एशियाटिक सोसायटी", और अठारवी शताब्दी में थॉमस विलियम रिस डेव्हिड्स द्वारा स्थापित "पालि टेक्स्ट सोसायटी", इनका योगदान महत्वपूर्ण रहा हैं। इन्हीं के माध्यम से आगे उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में श्रीलंका के भन्ते अनागारिक धम्मपालजी के द्वारा बौध्द धर्म तथा पालि भाषा का अध्ययन एवं प्रचार, प्रसार हेतुं " महाबोधी सोसायटी" की स्थापना हुई। इसी प्रकार, इसी बीच भारत में भी कुछ विद्वानों के माध्यम से जो बौध्द धम्म के प्रति श्रध्दा रखते थे, वो पालि भाषा का अध्ययन करके भारत के लोगों के लिए पालि भाषा एवं बौध्द धर्म का अध्ययन करने हेतुं अध्यासन केंद्र तथा पालि साहित्य का भारतीय भाषाओं में अनुवाद एवं निर्माण करते दिखाई देते हैं। उसमें धर्मानंद कोसंबी जी का नाम अग्रक्रम से आता है, जिन्होंने 1908 में कोलकता विश्वविद्यालय में पालि अध्यासन विभाग की स्थापना कीं और उसके साथ पालि साहित्य का हिन्दी अनुवाद एवं पालि साहित्य की रचना करने में बडा योगदान दिया। इनके साथ-साथ और भी कई ऐसे विद्वान थे और आज भी वर्तमान में हैं जिन्होंने पालि भाषा साहित्य निर्माण तथा अनुवाद में बहुत योगदान दिया हैं। उनमेंसे प्रमुख नाम हैं - चन्द्रमणि महास्थविर जिन्होंने सन् 1908 में धम्मपद का हिन्दी अनुवाद किया था। महापंडित राहुल सांकृत्यायन जिनके द्वारा दीघनिकाय, मज्झिमनिकाय, धम्मपद और विनयपिटक के चुल्लवग्ग, महावग्ग के हिन्दी अनुवाद हुआ हैं। इसी प्रकार भिक्षु धर्मरक्षितजी भी संयुत्तनिकाय, मज्झिमनिकाय, थेरिगाथा, खुद्दकपाठ, चरियापिटक, जातकनिदान, तेलकटाहगाथा,

कालामसुत्त, महापरिनिब्बानसुत्त आदि ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया है। उसी के साथ उन्होंने पालिपाठ-माला, पालि व्याकरण आदि की स्वतंत्र रचना की है। इसी प्रकार इसी श्रृंखला में भदन्त तिस्सवंस महास्थविर, भदन्त आनंद कौसल्यायन, भिक्षु जगदीश काश्यप, आचार्य धर्मकिर्ती, भिक्षु धर्मरत्न, एन. के. भागवत, आर. डी. वाडेकर, मुनि जिनविजय, भरतसिंह उपाध्याय, पी. वी. बापट, सत्यनारायण गोयंकाजी ऐसे और भी अनेक विद्‌वतजन हैं, जिनका बहुत बडा योगदान पालि भाषा एवं साहित्य के विकास में सराहनिय हैं। इसके अलावा पालि साहित्य में पालि भाषा व्याकरण की हिन्दी अनुवाद भी महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता हैं। उसमें कच्चायन व्याकरण, मोग्गलान व्याकरण, सद्दनिती व्याकरण आदि आते हैं। और साथ ही पालि शब्दकोश का भी हिन्दी, मराठी, आदि अन्य भाषाओं में अनुवाद पालि भाषा एवं साहित्य के विकास में हमें प्रगति की ओर ले जाता हैं। उसमें बोधिसत्व डॉ. भीमराव अंबेडकरजी का बडा योगदान प्राप्त होता हैं। सन् 1956 में लाखों अनुयायीओं के बौध्द धर्म में साथ दीक्षित होकर बौध्द धम्म तथा पालि भाषा के प्रसार एवं प्रचार हेतु उनके द्‌वारा “ बुध्दा ॲन्ड हिज धम्मा” जैसे महान ग्रंथ तथा अंग्रेजी, मराठी और गुजराती में पालि शब्दकोश का निर्माण हमें पालि के विकास में प्रेरणा प्रदान करता हैं।

इस प्रकार पालि भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की अहम भूमिका हमें आज के आधुनिक युग में दिखाई देती है। लेकिन इस विकास के साथ-साथ और भी अनुवाद के बारे में हमें आज आधुनिक काल में पालि भाषा एवं साहित्य की समस्याऍं एवं चुनौतियॉं दिखाई देती हैं। क्यों कि, आज भी भारत में प्रचुर मात्रा में पालि भाषा एवं साहित्य का अनुवाद अन्य भाषाओं में नहीं के बराबर है। उसमें प्रमुख रुप से मराठी, कन्नडा, तेलुगु, तमिळ, गुजराती आदि भाषाओं में अनुवाद होना आवश्यक है। अनुवाद के इस कार्य में अनुवादक को मुख्य रूप से

शब्दार्थ संबंधी, वाक्य संरचना संबंधी, संबंधित भाषा क्षेत्र के आचार, विचार एवं संस्कृती संबंधी योग्य ज्ञान और जानकारी होना अतिआवश्यक है। जो योग्य अनुवाद की सफलता की कडी है। अनुवाद के और एक कडी में लिप्यंतर का भी एक महत्व है। जो विदेशी भाषाएॅ हैं उनकी लिपी आत्मसात करनी होगी। जैसे श्रीलंका की सिंहली लिपी, बर्मा की बर्मी लिपी, थाई लिपी इत्यादि जहाॅ प्रचूर मात्रा में पालि साहित्य उपलब्ध है, उसे जानकर उसका अनुवाद भारतीय भाषाओं में होना आवश्यक हैं। भारत में भी अन्य लिपीयाॅ हैं जैसे कन्नड की लिपी, तेलगु, तमीळ आदि जो पालि भाषा साहित्य के विकास में अनुवाद की कडियाॅ बन सकती हैं। इसके साथ ही पालि भाषा बुध्द वचनों के माध्यम से पुरातत्वों के उत्खनन से मिले शिलालेख, प्रस्तर लेख, ताम्र लेख आदि प्राचिन लेख की लिपी, जो ब्राम्ही(धम्म) लिपी, खरोष्टी लिपी हैं। उसका भी अभ्यास एवं योग्य अनुसंधान होना आवश्यक हैं।

निष्कर्ष:

आज के आधुनिक काल में बुध्द धम्म का उपदेश जो नीति, सदाचार, बन्धुभाव, विचार स्वातंत्र्य, प्रज्ञा और शांती प्रदान कर मैत्री स्थापित करता है, जो मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए आतिआवश्यक हैं। वो धम्म उपदेश हमें पालि साहित्य से प्राप्त होता है। उस पालि साहित्य का संवर्धन एवं जतन होना आवश्यक हैं। उस के लिए हमें सम्यक प्रयासरत होना होगा । तभी हर घर-घर पालि भाषा के माध्यम से बुध्द वचनों का, धम्म का पालन होगा।

॥ सब्बे भद्दानि पस्सन्तु ॥

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1) भिक्षु धर्मरक्षित: 'पालि साहित्य का इतिहास' (2017) ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी.
2) जी. गोपीनाथन, एस. कंदस्वामी (सं.एवं संयोजक) "अनुवाद की समस्याएँ (2011) लोकभारती प्रकाशन.
3) रिगजिन लुण्डुप लामा: हिन्दी अनु. 'लामा तारानाथ विरचित भारत में बौध्द धर्म का इतिहास' (1971) काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना.
4) महापंडित राहुल सांकृत्यायन: 'पालि साहित्य का इतिहास' (2017) हिन्दी साहित्य परिषद.